

Date - 10/02/2025

Time - 10. AM

डॉ मनोज कुमार सिंह
मनोविज्ञान विभाग
महाराजा कॉलेज आरा

P.G - 2nd Semester

Paper - CC - 7

Psychopathology

Topic :-

आईसीडी तंत्र की मुख्य विशेषताएं (Main feature of ICD system)

असामान्य व्यवहारों या मानसिक विकृतियों के वर्गीकृत करने का प्रयास काफी पुराना है और इसका उल्लेख हमें ग्रीक, रोमन तथा मिश्र देशवासियों द्वारा प्रदत्त व्याख्याओं में स्पष्ट रूप से मिलता है। लेकिन इसकी प्रभावशीलता आधुनिक वर्गीकरण तंत्र पर कुछ खास नहीं रहा है। सचमुच में एक स्पष्ट एवं वैज्ञानिक वर्गीकरण का प्रयास 19वीं शताब्दी से प्रारम्भ हुआ जब अमेरिका तथा यूरोप के कई देशों में मानसिक रोगियों के उपचार के लिए विभिन्न तरह के मानसिक अस्पताल खोलने का सार्थक प्रयास किया गया। 1882 में ग्रेट ब्रिटेन में स्टेटीस्टिकल कमेटी ऑफ द रायल मेडिको साइकोलॉजिकल एशोसियेशन (Statistical Committee of the Royal Medico-psychological Association) ने कुसमायोजी व्यवहार के वर्गीकरण का एक तंत्र का प्रतिपादन किया था जिसका तीन बार संशोधन भी हुआ परंतु फिर भी इसके सदस्यों द्वारा ही इसकी बहुत अधिक प्रशंसा नहीं की गयी। अमेरिका में 1886 में "एशोसिएशन ऑफ मेडिकल सुपरिटेन्डेन्ट्स ऑफ अमेरिकन इन्सटीच्यूशन फॉर दी इनसेन" (Association for Medical Superintendents of American Institutions for the Insane) ने ब्रिटिश तंत्र के संशोधित प्रारूप को स्वीकार किया। यह एशोसियेशन आज के अमेरिका मनश्चिकित्सीय संघ (American Psychiatric Association) का अग्रदूत माना गया है। 1913 में एशोसियेशन ने एक नयावर्गीकरण तंत्र को स्वीकार किया जिसमें इमिल क्रेपलिन (Emil Kraepelin) के विचारों को शामिल किया गया। क्रेपलिन को श्रेणीबद्ध वर्गीकरण तंत्र (Categorical classification system) का जनक माना जाता है जिन्होंने 1883 में ही एक ऐसा वर्गीकरण तंत्र का सुझाव दिया था जिसमें मानसिक रोग का एक अस्पष्ट आंशिक स्वरूप का उल्लेख था। इसके बावजूद क्रेपलिन एक वैसा वर्गीकरण तंत्र प्रदान करने में सफल नहीं हो पाये जिसका सभी जगह स्वागत हुआ हो। फिर भी इसका प्रभाव आधुनिक वर्गीकरण तंत्र पर अवश्य ही पड़ा है।

1948 में वर्ल्ड हेल्थ औरगनाइजेशन (World Health Organisation WHO) ने 'इंटरनेशनल स्टैटिस्टिकल क्लासिफिकेशन ऑफ डिजिजेज, इनजुरिज एण्ड काऊजेज ऑफ डेथ' (International statistical classification of Diseases, Injuries and causes of Death ICD) के छठे संस्करण का प्रकाशन किया जिसमें मानसिक रोगों का एक औपचारिक वर्गीकरण (Formal Classification) का एक प्रकाशन किया गया जिसकी मान्यता ब्रिटेन के अलावा अन्य कई देशों में काफी रही। इस वर्गीकरण के प्रकाशन में अमेरिकन मनश्चिकित्सकों (American psychiatrists) की अहं भूमिका थी। ICD का नौवां संस्करण जिसे ICD-9 कहा गया, का प्रकाशन 1979 में किया गया जिसमें एक ऐसा वर्गीकरण तंत्र पर बल डाला गया जिसमें सभी तरह के दैहिक एवं मानसिक रोगों के श्रेणियों को सम्मिलित किया गया था। ICD-9 का संशोधित संस्करण 1993 में प्रकाशित हुआ जिसे

ICD-10 कहा गया। केन्डेल Kendell, 1991) के अनुसार DSM-IV तथा WHO के ICD-10 में मानसिक रोगों के प्रकाशित वर्गीकरण कई दृष्टिकोणों से लगभग एक समान हैं। इन दोनों वर्गीकरण तंत्रों के विभिन्न श्रेणियों में यथासंभव संगतता बनाए रखने का भरपूर प्रयास किया गया है।

डी एस एम तंत्र की मुख्य विशेषताएँ (Main Features of DSM Classification System):

WHO द्वारा ICD-6 के प्रकाशन के तुरंत बाद अमेरिकन मनश्चिकित्सक संघ (APA) (American Psychiatric Association) ने एक तुलनात्मक रूप से अधिक प्रभावकारी वर्गीकरण तंत्र का प्रकाशन किया जिसे डायग्नोस्टिक एण्ड स्टैटिस्टिकल मैनुअल ऑफ़ मेंटल डिसऑर्डर (Diagnostic and statistical Manual of Mental Disorder या DSM) कहा गया। इसका प्रकाशन 1992 में किया गया जिसे DSM-1 कहा गया। DSM-1 का संशोधित प्रारूप 1968 में आया जो DSM-II कहलाया। 1960 वाले दशक में DSM-II द्वारा असामान्य व्यवहार के प्रदत्त वर्गीकरण की व्यापक आलोचना हुयी। परिणामतः इसका पुनः संशोधित प्रारूप DSM-III के रूप में 1980 में आया। DSM-III की पुनर्समीक्षा की गयी जिसका प्रकाशन 1987 में किया गया और जिसे DSM-III R (Revised) कहा गया। पुनः कुछ कमियों को दूर करने के इरादे से DSM-III-R में संशोधन करके एक नया प्रारूप का प्रकाशन किया गया जिसे DSM-IV कहा गया जिसका प्रकाशन 1994 में हुआ। फिर 2000 में DSM-IV में हल्का संशोधन किया गया जिसे DSM-IV (Text Revision) कहा गया।

DSM-IV (TR) मानसिक विकृतियों का एक नवीनतम एवं वैज्ञानिक वर्गीकरण तंत्र है। इसमें मानसिक रोगों को वर्गीकृत करने के लिए एक बहुआयामीय वर्गीकरण तंत्र (Multiaxial classification system) का उपयोग किया गया है। इसमें किसी व्यक्ति को पाँच अलग-अलग विमाओं (Five separate axes) पर रेट किया जाता है। इनमें से दो विमाओं में मानसिक रोगों का वर्गीकरण तथा अन्य तीन विमाओं द्वारा कई तरह के अतिरिक्त संगत सूचनाओं को इकट्ठा करने का प्रयास किया जाता है।

DSM-IV (TR) में मानसिक विकृतियों को एक ऐसा व्यवहारपरक या मनोवैज्ञानिक पैटर्न के रूप में परिभाषित किया गया है जो व्यक्ति में दुख या तकलीफ (Distress) को उत्पन्न करता है या व्यक्ति के कार्य को एक या एक से अधिक क्षेत्रों में अयोग्य (Disabled) कर दिया है। इस तरह से मानसिक रोग के होने का अनुमान तभी निश्चित रूप से लगाया जा सकता है जब उससे व्यक्ति में वास्तविक दुष्क्रिया (Genuine Dysfunction) की अवस्था उत्पन्न हुआ हो।

DSM-IV (TR) के पाँचों आयाम (axis) निम्न हैं।

आयाम-1: नैदानिक संलक्षण (Axis: 1 Clinical syndromes)-इसके अन्तर्गत व्यक्तित्व विकृति तथा मानसिक मंदता को छोड़कर सोलह मानसिक रोगों को रखा गया है जिसमें दुश्चिन्ता विकृतियाँ (Anxiety disorders), मनोविदालिता (Schizophrenia), द्विध्रुवीय मनस्थिति विकृति (Bipolar mood disorders) आदि प्रमुख हैं।

आयाम II: व्यक्तित्व विकृतियाँ तथा मानसिक मंदता (Axis-II: Personality disorders and mental retardation)-इसके अन्तर्गत उन विकृतियों को रखा गया है जो बाल्यावस्था या किशोरावस्था में सामान्यतः प्रारम्भहोते हैं तथा वयस्कावस्था तक स्थायी रूप ले लेते हैं। इसमें दस तरह के व्यक्तित्व विकृतियाँ (Personality disorders) तथा मानसिक मंदता (Mental retardation) को रखा गया है।

आयाम-III सामान्य चिकित्सीय अवस्थाएँ (Axis-III General medical conditions)-इसके अन्तर्गत उन सभी चिकित्सीय अवस्थाओं को रखा गया है जो मनोवैज्ञानिक रोग उत्पन्न करने में सहायक होते हैं।

आयाम-IV : मनोसामाजिक एवं पर्यावरणी समस्याएँ | Axis-IV: Psychosocial and Environmental problems)-इस आयाम के अन्तर्गत उन कारकों को रखा गया है जो गत कुछ वर्षों में व्यक्ति के लिए समस्या का स्रोत रहा है या भविष्य में होने वाले प्रत्याशित समस्याएँ जिससे व्यक्ति की वर्तमान समस्याएँ बढ़ जाती हैं, पर विचार किया जाता है। सचमुच में यह आयाम जैसे मनोसामाजिक एवं पर्यावरणी आसेन्धकों (Stressors) जो मानसिक विकृति के निदान एवं उपचार को प्रभावित कर सकते हैं, को अभिलोखित करने का एक चेकलिस्ट (Checklist) है।

आयाम-V : कार्यों का सम्पूर्ण मूल्यांकन (Axis-V: Global assesment of functioning) : इस आयाम के तहत व्यक्ति के समायोजी कार्यों (Adaptive functions) के स्तर का मापन होता है। यहा रोगी के परिवार तथा दोस्तों के साथ सामाजिक संबंध (Social relation), पेशेवर कार्यवाही (Occupational functiny) तथा खाली समय का उपयोग, को मापने के लिए 100 बिन्दु मापनी का उपयोग किया जाता है।

निष्कर्षतः तब कहा जा सकता है कि **DSM-IV (TR)** के प्रथम दो आयामों के द्वारा मानसिक रोगों का वर्गीकरण किया जाता है तथा अंतिम तीन आयामों द्वारा व्यक्ति के बारे में उसके वास्तविक लक्षणों (**Actual symptoms**) से आगे जाकर उसके बारे में एक व्यापक तस्वीर प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।